Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन: मूल्य आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता

चन्द्रशेखर उसरेठे*

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय महाविद्यालय, चौरई, जिला-छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – स्वामी विवेकानन्द भारतीय नवजागरण के प्रमुख चिंतक, समाज-सुधारक तथा आध्यात्मिक मार्गदर्शक रहे हैं। उन्होंने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान या उपाधि प्राप्ति का साधन नहीं माना, बल्कि उसे मनुष्य के सर्वांगीण विकास का आधार बताया। विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास का विकास, व्यक्तित्व निखार तथा समाजोपयोगी नागरिक तैयार करना होना चाहिए। उन्होंने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जो ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता, अनुशासन, सेवा-भावना और आत्मनिर्भरता को भी विकसित करे। वर्तमान समय में जब शिक्षा व्यवस्था में मूल्य-ह्रास, दिशाहीनता तथा केवल रोजगार केन्द्रित सोच बढ़ती जा रही है, तब विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा संबंधी विचारों का विश्लेषण करना तथा यह स्पष्ट करना है कि उनके शिक्षा-दर्शन के माध्यम से आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवतावादी, नैतिक और जीवनोपयोगी कैसे बनाया जा सकता है।

प्रस्तावना – शिक्षा किसी भी समाज के निर्माण का मूल आधार होती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में विचार, चेतना, विवेक और जिम्मेदारी का विकास होता है। किन्तु यह भी सत्य है कि शिक्षा की सार्थकता तभी है जब वह मनुष्य को केवल पढ़ा-लिखाकर नौकरी योग्य न बनाए, बल्कि उसे श्रेष्ठ मनुष्य, जागरूक नागरिक और समाज के लिए उपयोगी व्यक्ति के रूप में विकसित करे। स्वामी विवेकानन्द ने इसी उद्देश्य से शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण और मानव-निर्माण का प्रमुख साधन माना। उन्होंने बार-बार कहा कि शिक्षा वह है जो मनुष्य के भीतर छिपी शक्तियों को जाग्रत कर दे। उनका शिक्षा-दर्शन केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं था, बल्कि वह जीवन को सुदृढ़, संतुलित और चरित्रवान बनाने वाली शिक्षा पर बल देता है। आज के युग में जब शिक्षा व्यवस्था में प्रतियोगिता, तनाव, नैतिक गिरावट और उद्देश्यहीनता जैसी समस्याएँ दिखाई देती हैं, तब विवेकानन्द की शिक्षा-दृष्टि हमें नई दिशा प्रदान करती है।

शोध समस्या :

1. आधुनिक शिक्षा में ज्ञान तो बढ़ रहा है, पर चरित्र और नैतिकता कमजोर होती जा रही है।
2. शिक्षा का लक्ष्य केवल नौकरी और परीक्षा तक सीमित होता जा रहा है।
3. युवाओं में आत्मविश्वास, अनुशासन तथा समाज-सेवा की भावना घटती दिखाई देती है।
4. शिक्षा व्यवस्था में व्यक्तित्व विकास और मूल्य-शिक्षा को पर्याप्त महत्व नहीं मिल रहा।
5. प्रश्न यह है कि विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन को अपनाकर शिक्षा को अधिक मानवतावादी और जीवनोपयोगी कैसे बनाया जाए?

शोध उद्देश्य:

1. स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन की मुख्य अवधारणाओं को स्पष्ट करना।
2. विवेकानन्द द्वारा बताए गए शिक्षा के उद्देश्यों का विवेचन करना।
3. चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका को समझना।
4. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों के संदर्भ में विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता बताना।
5. मूल्य आधारित शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति :

1. यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।
2. शोध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।
3. निष्कर्ष विवेचनात्मक अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन – स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित श्रेष्ठ गुणों और शक्तियों का विकास करना है। उन्होंने शिक्षा को केवल बाह्य जानकारी का संचय नहीं माना, बल्कि उसे आत्म-विकास की प्रक्रिया कहा। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अपार क्षमताएँ होती हैं, शिक्षा का कार्य उन्हें जागृत करना है। विवेकानन्द ने शिक्षा को आत्मविश्वास की नींव बताया। उनके अनुसार कमजोर मन वाला व्यक्ति जीवन में सफल नहीं हो सकता, इसलिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को निर्भय, आत्मविश्वासी और लक्ष्य के प्रति सजग बनाए।

विवेकानन्द ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना। उनके अनुसार बिना चरित्र के ज्ञान का कोई मूल्य नहीं है। उन्होंने शिक्षा में सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, परिश्रम और सेवा-भावना जैसे मूल्यों को अनिवार्य बताया। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति

के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए होनी चाहिए। जो शिक्षा समाज को मजबूत नहीं बनाती, वह अधूरी है। इस दृष्टि से विवेकानन्द ने युवाओं को राष्ट्र-निर्माण की शक्ति माना और उन्हें जागरूक, आत्मनिर्भर तथा सेवा-भावी बनाने पर बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द व्यावहारिक शिक्षा के समर्थक थे। उनका मानना था कि शिक्षा जीवन से जुड़ी होनी चाहिए। केवल पुस्तकीय ज्ञान से मनुष्य आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। इसलिए शिक्षा में कौशल, कार्य-क्षमता और व्यवहारिक ज्ञान को महत्व देना चाहिए। इसके साथ उन्होंने आध्यात्मिकता को भी शिक्षा का आवश्यक अंग माना। यहाँ आध्यात्मिकता का अर्थ किसी संकीर्ण धार्मिकता से नहीं, बल्कि आत्मसंयम, नैतिकता, मानवता और विवेक से है। इस प्रकार विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन एक ऐसी समग्र दृष्टि प्रस्तुत करता है जिसमें ज्ञान, कौशल, चरित्र और मानवता का संतुलित विकास होता है।

समकालीन प्रासंगिकता - वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था अनेक संकटों से गुजर रही है। परीक्षा और अंक आधारित प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा को दबावपूर्ण बना दिया है। छात्रों में तनाव, निराशा और दिशाहीनता बढ़ रही है। दूसरी ओर नैतिकता और मानवीय मूल्यों का ह्रास भी स्पष्ट दिखाई देता है। ऐसी परिस्थितियों में विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि वह शिक्षा को केवल आर्थिक लक्ष्य नहीं, बल्कि मानव-निर्माण की प्रक्रिया मानता है। यदि शिक्षा में आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण, अनुशासन और सेवा-भावना जैसे तत्व शामिल किए जाएँ, तो युवा पीढ़ी अधिक सशक्त और सकारात्मक बन सकती है। विवेकानन्द के विचार शिक्षा को जीवनोपयोगी, नैतिक और समाजोन्मुख बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

सुझाव - शिक्षा को विवेकानन्द के दृष्टिकोण के अनुरूप बनाने के लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में मूल्य-शिक्षा और चरित्र निर्माण को अनिवार्य स्थान दिया जाए। विद्यालय और महाविद्यालयों में सेवा-कार्यों, अनुशासन, योग, ध्यान तथा सामुदायिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए। शिक्षकों को केवल विषय पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और चरित्र-निर्माता के रूप में विकसित किया जाए। छात्रों में आत्मविश्वास और नेतृत्व गुण विकसित करने हेतु संवाद, भाषण, वाद-विवाद और रचनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने के साथ-साथ उसे मानवतावादी और नैतिक बनाना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष - इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन आज भी उतना ही उपयोगी और मार्गदर्शक है जितना उनके समय में था। उन्होंने शिक्षा को आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण और राष्ट्र-निर्माण का आधार माना। उनका विचार था कि शिक्षा मनुष्य को निर्भय, आत्मनिर्भर, सेवा-भावी और नैतिक बनाती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में यदि विवेकानन्द के विचारों को अपनाया जाए तो शिक्षा केवल उपाधि प्राप्ति तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि वह समाज को श्रेष्ठ नागरिक और राष्ट्र को सशक्त आधार प्रदान करेगी। इसलिए विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन आधुनिक भारत में मूल्य आधारित शिक्षा की दिशा में एक प्रभावी मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. स्वामी विवेकानन्द - विवेकानन्द साहित्य (खंड 1-8) - रामकृष्ण मठ/रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
2. स्वामी विवेकानन्द - कर्मयोग- रामकृष्ण मठ/रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
3. स्वामी विवेकानन्द-भक्तियोग-रामकृष्ण मठ/रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
4. स्वामी विवेकानन्द-ज्ञानयोग- रामकृष्ण मठ/रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
5. स्वामी विवेकानन्द-मेरे जीवन और संदेश (उपलब्ध प्रमाणिक संस्करण)-रामकृष्ण मठ प्रकाशन।

****